39

चिह्न के लिए लोगों की मांग

(16:1-4)

यीशु से लोगों के समूहों की अलग-अलग प्रतिक्रियाओं का विषय अध्याय 16 तक चला जाता है। आरम्भिक आयतों में फरीसियों और सदूकियों ने उसे मसीहा के रूप में नकार दिया था और उसे बदनाम करने की कोशिश की (16:1-4)। इस घटना के बाद यीशु ने उन यहूदी अगुओं के अविश्वास के विरुद्ध अपने चेलों को चेतावनी दी (16:5-12)। फिर उस ने अपने चेलों के सामने अपनी पहचान का सवाल रखा, जिसके परिणाम स्वरूप पतरस ने यीशु का अंगीकार ''जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह'' के रूप में किया (16:13-20)।

इस अंगीकार के बाद, यीशु ने अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने की भविष्यवाणी की। इस खबर को स्वीकार न करने को तैयार पतरस उसे एक ओर ले जाकर डांटने लगा। स्पष्टतया उस ने इस सच्चाई को समझा नहीं था कि मसीह का दुख उठाना आवश्यक है (16:21-23)। इसी अवसर का इस्तेमाल करते हुए, यीशु ने अपने चेलों को चेले बनने की पूरी समझ के लिए बुलाया, जिसमें अपने प्रभु की तरह दुख उठाना शामिल है (16:24-27)। इस बातचीत के अपने अन्तिम शब्दों में प्रभु ने उन्हें आश्वस्त किया कि राज्य वास्तव में उनके जीते जी ही आना था (16:28)।

प्रश्न (16:1)

[1]फरीसियों और सदूकियों ने पास आकर उसे परखने के लिए उस से कहा, ''हमें स्वर्ग का कोई चिह्न दिखा।''

मत्ती 16:1-4 इस बात पर ज़ोर देता है कि यहूदियों के अधिकतर धार्मिक अगुओं ने मसीहा के रूप में यीशु को नकार दिया था। यह दृश्य 12:38-42 से मिलता-जुलता है, जब पहले अगुओं का एक दल उसके पास आकर चिह्न की मांग करने लगा था। दोनों अवसरों पर उस का उत्तर वही था कि उन्हें योना नबी के चिह्न को छोड़ और कोई चिह्न नहीं मिलना था।

आयत 1. अपनी व्यक्तिगत सेवकाई के आरम्भ से यहूदी धार्मिक अगुओं के सबसे ज़बानी और पक्के विरोध के साथ यीशु का सामना **फरीसियों** के दल से हुआ। नाम ''फरीसियों'' का अर्थ है ''अलग किए हुए।'' यह उनसे मेल भी खाता था, क्योंकि उन्होंने अपने आपको अन्य सब यहूदियों से अलग किया हुआ था। वे अपने समय के आत्मिक वशिष्ट लोग अर्थात अत्यन्त रूढ़िवादी और परम्परा से बंधे दल थे (3:7 पर टिप्पणियां देखें)।

सदूकियों का अन्तिम बार उल्लेख 3:7 में मिला था। सदूकियों के बारे में जितना नये नियम में बताया गया है, उससे अधिक पता नहीं है। वे भी यहूदी धार्मिक अगुओं में से थे। वे

कुलीन लोग थे, जो अपने में से महायाजक और कई प्रधान याजकों के होने पर शेखी मारते थे, चाहे शास्त्री और याजक इन दोनों दलों में पाए जाते थे। सदूकी लोग रब्बियों की परम्पराओं की परवाह नहीं करते थे और धार्मिक, सांस्कृतिक या राजनैतिक समझौते करने से कतराते नहीं थे। वे पवित्र शास्त्र को मुख्यतया पंचग्रंथ को मानने का दावा करते थे, परन्तु उनकी व्याख्याएं इतनी आध्यात्मिक होती थीं कि उनका कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं रहता था। ये यहूदी अत्यधिक उदारवादी अर्थात भौतिकवादी दल थे। वे स्वर्गदूतों, अमरता, पुनरुत्थान या किसी और बात पर विश्वास नहीं करते थे, जिसमें अलौकिकता का संकेत हो (3:7 पर टिप्पणियां देखें)।

फरीसियों और सदूकियों का एक हो जाना असामान्य बात लग सकती है, क्योंकि वे धार्मिक और राजनैतिक दृश्यों में वे एक दूसरे के विरोधी थे। इन दोनों गुटों में बड़े अन्तर होने के बावजूद यीशु के प्रति अपनी शत्रुता में वे एक थे (देखें 22:15-46)। वे एक-दूसरे को तुच्छ मानते थे पर यीशु से वे इससे भी अधिक घृणा करते थे। फरीसी लोग यीशु द्वारा उनकी परम्पराओं को चुनौती देने को पसन्द नहीं करते थे, जबकि सदूकी किसी भी प्रकार की मसीहा की लहर का विरोध करते थे, जो रोमियों के बदला लेने का कारण बने।

अन्यजाति लोगों के विपरीत जो यीशु के आश्चर्यकर्मों के कारण परमेश्वर की महिमा करते थे (15:31), यहूदी अगुवे स्पष्ट रूप में उसे बदनाम करने को आए थे। **परखने** के पीछे के यूनानी शब्द (*peirazō*) का अनुवाद ''प्रलोभन'' (KJV) भी हो सकता है। यही क्रिया शब्द जंगल में शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा करने के समय इस्तेमाल किया गया (4:1 पर टिप्पणियां देखें)। शैतान की तरह ही लग रहा था कि ये यहूदी अगुवे भी यीशु को परीक्षा में फेल करना चाहते थे (देखें 19:3; 22:18, 35)। डग्लस आर. ए. हेयर ने कहा है कि उन्हें लगा हो सकता है कि वे बाइबली मानकों के अनुसार यीशु की परीक्षा ले रहे थे (व्यवस्थाविवरण 13:1-3; 18:15-22), जबकि वास्तव में उनकी परीक्षा हो रही थी (व्यवस्थाविवरण 6:16; भजन संहिता 95:8, 9; इब्रानियों 3:7-11)। आखिर यीशु ने बार-बार किए जाने वाले आश्चर्यकर्मों के द्वारा अपनी पहचान पहले से साबित कर दी थी।[1]

यहूदी अगुओं ने **उससे कहा**, **''हमें स्वर्ग का कोई चिह्न दिखा।''** यह विनती कई अवसरों पर की गई थी (12:38-42; लूका 11:16; यूहन्ना 2:18; 6:30)। वे आश्चर्यकर्म जो यीशु ने किए थे, हाल ही के चंगाई के काम, स्वर्ग से प्रामाणिक चिह्न थे; परन्तु उसके शत्रु उनसे कहीं बड़े चिह्न की मांग कर रहे थे। वे ज़मीन हिला देने से कुछ अधिक चाहते थे, न केवल वे चंगाइयां, जिनका दूसरों ने भी करने का दावा किया था।[2] इन लोगों ने यीशु की सामर्थ से इनकार नहीं किया, परन्तु उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया कि वह परमेश्वर की ओर से है। उन्होंने उस पर शैतान का आदमी होने का आरोप लगाया (12:24)।

''चिह्न'' आश्चर्यकर्म को कहा गया था, जिसके द्वारा कोई यह जान सकता था कि किसी के पास अलौकिक शक्ति है क्योंकि इससे उसके अधिकार की पुष्टि होती थी (देखें 11:2-6; यूहन्ना 1:29-34; 20:30, 31)। ''स्वर्ग का'' वाक्यांश परोक्ष रूप में ''परमेश्वर का'' कहने का ढंग हो सकता है। शायद वे परमेश्वर की ओर से निर्विवाद प्रमाण चाहते थे कि यीशु ही मसीहा है। ''स्वर्ग का'' का अर्थ ''आकाश में'' हो सकता है। शायद वे मूसा के समय में स्वर्ग से भेजे गए मन्ना के जैसा कुछ (निर्गमन 16:1-36), यहोशू के समय में सूर्य के थम जाने (यहोशु

10:12–14) या एलिय्याह के जीवनकाल में स्वर्ग से आग गिरने (1 राजाओं 18:30–40) जैसा कुछ दिखाने को कह रहे थे।

उत्तर (16:2-4)

[2]उस ने उनको उत्तर दिया, ''सांझ को तुम कहते हो, 'मौसम अच्छा रहेगा क्योंकि आकाश लाल है,' [3]और भोर को कहते हो, 'आज आंधी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धूमिल है।' तुम आकाश के लक्षण देखकर उस का भेद बता सकते हो, पर समयों के चिह्नों का भेद क्यों नहीं बता सकते? [4]इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिह्न ढूंढ़ते हैं, पर योना के चिह्न को छोड़ उन्हें और कोई चिह्न उन्हें न दिया जाएगा।'' और वह उन्हें छोड़कर चला गया।

आयतें 2, 3. यीशु ने फरीसियों और सदूकियों को उनकी आत्मिक समझ की कमी को दिखाते हुए उत्तर दिया:

> **''सांझ को तुम कहते हो, 'मौसम अच्छा रहेगा क्योंकि आकाश लाल है,' [3]और भोर को कहते हो, 'आज आंधी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धूमिल है।' तुम आकाश के लक्षण देखकर उस का भेद बता सकते हो, पर समयों के चिह्नों का भेद क्यों नहीं बता सकते?''**

कई प्राचीन हस्तलिपियों में ये शब्द नहीं हैं,[3] परन्तु कई और हस्तलिपियों में ये शब्द पाए जाते हैं। इस कारण कुछ विद्वान यह मानते हैं कि वे बाद में डाले गए और दूसरे यह मानते हैं कि उन्हें मौसम की वैसी ही स्थितियों को न दर्शाने वाले मौसमों (जैसे मिस्र) में काम करने वाले ग्रंथियों द्वारा मिटा दिया गया।[4] प्रमाण का वजन वचन की प्रामाणिकता के पक्ष में है।

यीशु अपने उत्तर में यहूदी अगुओं की भाषा पर शब्दों का खेल खेल रहा हो सकता है; आयत 1 में अनुवाद हुआ शब्द ''स्वर्ग'' (*ouranos*) वही शब्द है, जिसका अनुवाद आयत 2 में ''आकाश'' किया गया है। उस का उत्तर नाविक की एक पुरानी कहावत ''सुबह को आकाश के लाल होने को नाविक चेतावनी मानता है; रात को आकाश का लाल होना नाविक के आनन्द की बात है'' से मेल खाता है।[5] रात को आकाश लाल होने पर आमतौर पर अगले दिन मौसम अच्छा होता है। सुबह आकाश लाल होने पर यह संकेत होता है कि तूफ़ान आने वाला है। यीशु यह कह रहा था कि अगुवे समय के चिह्नों से तो यह तय कर लेते हैं,[6] पर अपने सामने पूरे होने वाले आत्मिक चिह्नों को वे भूल गए हैं।

''समयों के चिह्नों'' वाक्यांश में उनके बीच में यीशु का होना और गतिविधि शामिल थी। यीशु की यह असामान्य उपस्थिति इस बात का संकेत था कि वे दिन थे जब लोगों को मन फिराव का निर्णय करने या उसे नकारने के लिए विवश किया जाना और उसके आने के न्याय का सामना करना पड़ना था।[7]

आयत 4. कोई शक नहीं कि उनके विश्वास से दुखी यीशु ने (मरकुस 8:12) यहूदी अगुओं से कहा कि **इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिह्न ढूंढ़ते हैं**। उस ने उनके विवरण

के लिए पुराने नियम के एक रूपक का इस्तेमाल किया, क्योंकि ये लोग आत्मिक रूप में परमेश्वर के वफ़ादार नहीं थे (देखें व्यवस्थाविवरण 32:5; यशायाह 50:1; यिर्मयाह 3:8; 13:27; 31:32; यहेजकेल 16:32-43; होशे 2:1-20)।

प्रभु ने कहा, ''**योना के चिह्न को छोड़ उन्हें और कोई चिह्न न दिया जाएगा**।'' अन्य ग्रंथियों और फरीसियों का सामना करते हुए उस ने इसी उदाहरण का इस्तेमाल किया था। पहले एक अवसर पर उस ने कहा था, ''योना तीन रात दिन जल जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा'' (12:40)। ''योना का चिह्न'' मसीह के जी उठने की परछाईं था (12:39, 40)। यह बड़ा आश्चर्यकर्म जिसने यीशु को परमेश्वर का पुत्र होना साबित किया (रोमियों 1:4) भी यहूदी अगुओं द्वारा नकार दिया गया था। इन बेइमानों ने उस की कब्र की निगरानी करने वाले रखवालों को रिश्वत देकर उसे छिपाने की कोशिश की थी (मत्ती 28:11-15)।

यीशु उत्तर देने के बाद **उन्हें छोड़कर चला गया**।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

आत्मिक अन्धापन (16:1-4)

इन संक्षिप्त वचनों में हम आत्मिक अंधेपन के शिकार लोगों की चार विशेषताओं को देखते हैं: (1) आत्मिक रूप में अंधे लोग अंधकार को ढूंढ़ते हैं, (2) वे ज्योति को श्राप देते हैं, (3) वे और अंधकार में वापस चले जाते हैं, और (4) उन्हें परमेश्वर द्वारा त्याग दिया गया है।

वैज्ञानिक, परन्तु आत्मिक नहीं (16:2, 3)

यीशु ने फरीसियों और सदूकियों को मौसम की भविष्यवाणी कर सकने के योग्य होने के बावजूद ''समयों के चिह्नों'' को न समझ पाने के कारण डांट लगाई। उन्होंने मसीह के रूप में उस की पहचान को बदनाम करने के साथ-साथ उस की शिक्षा और आश्चर्यकर्मों को भी अपमानित किया। यदि उस ने उनकी निंदा की, तो वह हमारी पीढ़ी के बारे में क्या कहेगा? हम मौसम के तरीकों के अध्ययन (जांच के कई अन्य वैज्ञानिक क्षेत्रों के साथ) बहुत आगे बढ़ गए हैं, परन्तु भौतिक संसार का ऐसा ज्ञान आत्मिक जागरूकता जितना नहीं है। बहुत से लोग अपनी अनैतिकता से अनजान हैं और वे मसीह की वापसी और आने वाले न्याय की बात को गम्भीरता से नहीं लेते।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]डग्लस आर. ए. *हेयर, मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 183. [2]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 413. [3]मरकुस के समानांतर विवरण में भी ये शब्द नहीं हैं (मरकुस 8:11, 12)। [4]ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट,* 2रा संस्क. (स्टटगार्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 33. [5]इस नियम का ज्ञात अति प्राचीन रिकॉर्ड थियोफ्रेस्ट्स *कन्सर्निंग वेदर साइन्ज़* 1.10 है। थियोफ्रेस्ट्स (लगभग 371-लगभग 287 ई. पू.)

अरस्तू का उत्तराधिकारी था। [6]प्राचीन लोग आमतौर पर बादलों के नमूने के आधार पर मौसम की भविष्यवाणी कर देते थे। (प्लायनी *नेचुरल हिस्ट्री* 18.78; वर्जिल *जोर्जिक्स* 1.438–60; टालमुड *योमा* 21बी।) [7]डेविड हिल, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 257.